04. जैन धर्म (Jainism)

- 6वीं शताब्दी में भारत कुल 72 संप्रदायों का विकास हुआ, जिसमें जैन धर्म, बौद्ध धर्म, आजीवक संप्रदाय लिंगायत, कापालिक, शैव धर्म और वैष्णव धर्म प्रमुख हैं।
- जैन शब्द संस्कृत के 'जीन' शब्द से बना है। जिसका अर्थ विजेता होता है।
- जैन धर्म का मुख्य केन्द्र बिन्दु 'अहिंसा' था।
- इस धर्म के संस्थापक ऋषभदेव थे।
- जैन धर्म के प्रवर्तक को तीर्थंकर कहा जाता है।
- तीर्थंकर का अर्थ होता है, दु:ख से परे संसार रूप सागर को पार कराने वाला।
- ऋषभदेव जैन धर्म के पहले तीर्थंकर थे।
- ऋषभदेव हिमालय पर्वत पर निर्वाण को प्राप्त किए थे।
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर तथा 22 तीर्थंकर अरिष्टनेमी का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर माने जाते हैं जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किए।
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पारसनाथ थे।
- इनका जन्म वाराणसी के राजा अश्वसेन के यहाँ हुआ था जो इच्छवाकु वंश से संबंधित थे।
- इन्हें झारखण्ड के सम्मेद शिखर पर ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिस कारण सम्मेद शिखर का नाम पारसनाथ की चोटी हो गया।

➤ **ज्ञान प्राप्ती के बाद इन्होंने चतुरायण धर्म दिया जो निम्नलिखित है–**

(i) झूठ न बोलना। (Non Lying) = सत्य
(ii) धन संग्रह न करना। (Non Possession) = अपरिग्रह
(iii) चोरी न करना। Astey (Non Stealing) = अस्तेय
(iv) हिंसा न करना। (Non Injury) = अहिंसा

- जैन धर्म के 24वें तिर्थंकर एवं अंतिम तिर्थंकर **महावीर स्वामी** हैं। इन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक कहते हैं।
- इनके पिता सिद्धार्थ थे, जो ज्ञातृक कुल के राजा थे।
- इनकी माता त्रिशला थी। जो लिच्छिवी नरेश चेतक की बहन थी। इनके बड़े भाई नदीवर्धन थे।
- इनके बचपन का नाम वर्धमान था।
- इनका जन्म 540 ई.पू. वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था।
- इनकी पत्नी यशोदा थी।
- इनकी बेटी प्रियदर्शनी (अन्नोज्जा) थी तथा दामाद जमालि था।
- 30 वर्ष की आयु में इन्होंने अपने बड़े भाई नंदीवर्धन से आज्ञा लेकर गृह त्याग दिए।
- 12 वर्ष के कठोर तपस्या के बाद जाम्भिक ग्राम में एक साल वृक्ष (बरगद) के नीचे ऋजुपालिका नदी के तट पर इन्हें ज्ञान की प्राप्ती हुई। ज्ञान प्राप्ती को ''कैवल्य'' कहते हैं।
- ज्ञान प्राप्ती के बाद इन्हें कैवलीन, जीन या निग्रोथ कहा गया। जीन का अर्थ होता है, विजेता जबकि निग्रोथ का अर्थ होता है, बंधन से मुक्त।
- वर्तमान में जाम्भिक ग्राम की पहचान हजारीबाग के समीप पारसनाथ की पहाड़ी तथा ऋजुपालिका नदी की पहचान दामोदर नदी की सहायक नदी बराकर नदी के रूप में किया जाता है।
- इन्होंने पहला उपदेश राजगीर में बितुलाचल पहाड़ी पर बराकर नदी के तट पर प्राकृत (अर्द्धमगही) भाषा में दिया था। जबकि अंतिम उपदेश पावापुरी में दिया।
- महावीर स्वामी का पहला भिक्षु उनका दमाद जमाली बना।
- प्रथम जैन भिक्षुणी चम्पा थी। जो राजा दधीवाहन की बहन थी।

➤ **ज्ञान प्राप्ती के बाद इन्होंने पारसनाथ द्वारा प्रारंभ चतुरायन धर्म में ब्रह्मचर्य शब्द जोड़कर पंचायन धर्म दिया जो निम्नलिखित हैं–**

जैन धर्म के पंचायन धर्म		
1.	अहिंसा	जान-बूझकर या अनजाने में भी किसी प्रकार की हिंसा नहीं करना।
2.	सत्य	सदा सत्य बोलना।
3.	अस्तेय	किसी व्यक्ति की कोई वस्तु बिना उसकी इच्छा के ग्रहण नहीं करना न ऐसी कोई इच्छा करना।
4.	अपरिग्रह	किसी प्रकार का संग्रह नहीं करना।
5.	ब्रह्मचर्य	ब्रह्मचर्य व्रत का सख्ती से पालन करना।

जैन धर्म की पाँच श्रेणियाँ		
1.	तीर्थंकर	वह जिसने मोक्ष की प्राप्ति की हो।
2.	अर्हत	वह जो निर्वाण की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो।
3.	आचार्य	जैन-भिक्षुओं के समूह का प्रमुख
4.	उपाध्याय	जैन धर्म का शिक्षक
5.	साधु	सारे जैन-भिक्षु

- **महावीर स्वामी ने त्रिरत्न दिए जो निम्नलिखित हैं–**
  (i) सम्यक् ज्ञान (Right knowledge)
  (ii) सम्यक् दर्शन (Right believe)
  (iii) सम्यक् आचरण (Right action)
- भगवान महावीर ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपने मतों के प्रचार-प्रसार के लिए एक संघ की स्थापना किए जिसमें 11 अनुयायी थे।
- महावीर स्वामी ने ईश्वर के अस्तित्व को नहीं माना जिस कारण वे मूर्तिपूजा और कर्मकांड का विरोध किए। अत: इन्हें अनेश्वरवादी भी कहा जाता है।
- इन्होंने पुनर्जन्म को माना और पुनर्जन्म का सबसे बड़ा कारण आत्मा को बताया। आत्मा को सताने के लिए इन्होंने कहा कि मोक्ष प्राप्ती के बाद पुनर्जन्म से मुक्ति मिल जाएगी।
- महावीर स्वामी ने अहिंसा पर सर्वाधिक बल दिया, जिस कारण उन्होंने कृषि तथा युद्ध पर प्रतिबंध लगा दिए।
- महावीर स्वामी के दिए गए उपदेशों को चौदह पूर्वी नामक पुस्तक में रखा गया जो जैन धर्म की सबसे प्राचीन पुस्तक है।
- महावीर स्वामी ने अपने उपदेश प्राकृत भाषा में दिए।
- महावीर ने अपने उपदेश में अनेकांतवाद की चर्चा किए।
- 72 वर्ष की अवस्था में 468 ई.पू. पावापुरी में मल्ल राजा सृस्तिपाल के दरवार में इनकी मृत्यु (निर्वाण) हो गई।
- पावापुरी उस समय मल्ल गणराज्य के अधीन था। जिसका शासक हस्तपाल था।
- महावीर स्वामी के बाद प्रथम उपदेश देने वाला आर्यसूधर्मा को घोषित किया गया था।
- भद्रबाहु तथा स्थूलभद्र इनके दो सबसे प्रिय अनुयायी थे।
- मौर्य काल में मगध पर 12 वर्षीय भीषण अकाल पड़ा जिस कारण भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ दक्षिण भारत में कर्नाटक चले गए। इन्हीं के साथ चन्द्रगुप्त मौर्य आये थे। जिसने कर्नाटक के श्रवण बेलगोला में संलेखना (संथारा) से प्राण त्याग दिये।
- इस भीषण अकाल में भी स्थूलबाहु तथा उसके अनुयायी मगध में ही रूके रहे। जब अकाल खत्म हो गया तो भद्रबाहु मगध लौट आया। किन्तु इन दोनों में विवाद हो गया।
- भद्रबाहु के नेतृत्व वाले लोग निर्वस्त्र रहते थे, जिन्हें दिगम्बर कहा गया।
- जबकि स्थूलभद्र के नेतृत्व वाले लोग श्वेत वस्त्र धारण करने लगे। जिसे श्वेताम्बर कहा गया।
- जैन धर्म के विस्तृत प्रचार के लिए 2 जैन संगीतियाँ हुई हैं।
- **पहली जैन संगीति–** यह 300 ई.पू. पाटलीपुत्र में हुई जिसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने किया। उसी में भद्रबाहु ने 12 अंग नामक पुस्तक की रचना की।

  Note :– दक्षिणी जैन दिगम्बर ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया।
- **द्वितीय जैन संगीति–** यह छठी शताब्दी में गुजरात के वल्लभी में हुई। उसकी अध्यक्षता देवाधिक्षमाश्रमण ने किया। उसी संगीति में 12 उपांग की रचना की गई।
- जैन साहित्य को आगम कहते हैं।
- जैन भिक्षु के निवास को वसदे कहा गया है।
- जैन तीर्थंकरों के जीवणी भद्रबाहू द्वारा रचित कल्पसूत्र में है। जो संस्कृत भाषा में है।
- अनुव्रत सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है।
- स्यादवाद, अनेकांतवाद, सप्तभृंगी ज्ञान, जीन, निग्रोथ, तीर्थंकर, कैवल्य सभी का संबंध जैन धर्म से है।
- महावीर के संकालीन शासक बिम्बिसार, चन्द्रप्रद्योत, अजातशत्रु, दधिवाहन तथा चेटक थे।
- जैन धर्म मानने वाला प्रमुख राजा- अजातशत्रु, उदयिन, वादराज, चंद्रगुप्त मौर्य, खारवेल, राष्ट्रकूट, अमोघवर्ष, चंदेल शासक।
- जैन मंदिर हाथी सिंह गुजरात राज्य में स्थित है।
- प्रसिद्ध जैनी जलमंदिर बिहार राज्य के पावापुरी में स्थित है।
- मथुरा कला का संबंध जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा हिंदू धर्म से है।
- जैन धर्म सर्वाधिक व्यापारी वर्ग के बीच फैला था।
- महावीर के अनुयायियों को निग्रंथ के रूप में जाना जाता था।
- महावीर के मुख्य शिष्य को गंधर कहा जाता था।
- महावीर के धार्मिक उपदेशों का संकलन पूर्वा नामक पुस्तक में है।
- जियो और जीने दो महावीर स्वामी का कथन है।
- जैन धर्म को अन्तिम राजकीय संरक्षक गुजरात के चालुक्य वंश के राजाओं ने दिया था।
- महावीर एक गाँव में एक दिन से अधिक तथा एक शहर में 5 दिन से अधिक नहीं रहते थे।
- **जैन धर्म के प्रमुख गंथ**
- यह प्राकृत भाषा में मिले हैं, इन्हें आगम कहते हैं।
  उदाहरण– 12 अंग, 12 उपांग, अचरांग सूत्र, भगवति सूत्र, कल्पसूत्र, आदि-पुराण।
- **अचरांग सूत्र–** इनमें जैन भिक्षुओं के आचार नियम व विधि निषेधों का विवरण।
- **भगवति सूत्र–** इसमें महावीर के जीवन की चर्चा है।
- **न्यायधम्मकहा सूत्र–** महावीर के शिक्षाओं का संग्रह।

प्रमुख जैन मंदिर

1. मौर्यकाल में मथुरा जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था।
2. कर्नाटक में चामुंड शासकों ने गोमतेश्वर का जैन मंदिर बनवाया जिसे बाहुबली का मंदिर कहते हैं।
3. मध्यप्रदेश में चंदेल शासकों ने खजुराहों में जैन मंदिर बनवाया। जिसमें बाहुबली की मूर्ति (गोमतेश्वर की मूर्ति) है।

Note :– खजुराहों हिन्दु और जैन दोनों का पवित्र स्थल है। जबकि अजंता बौद्ध, जैन और हिन्दु तीनों का पवित्र स्थल है।

4. राजस्थान में माऊंट आबु पहाड़ी पर दिलवाड़ा का प्रसिद्ध जैन मंदिर, विमलशाह के सामंत (अधिकारी) वस्तुपाल तथा तेजपाल के द्वारा बनाया गया है।

➢ **श्वेतांबर एवं दिगम्बर में अन्तर**

श्वेताम्बर	दिगम्बर
1. इसे स्थूलभद्र ने प्रारम्भ किया	इसे भद्रबाहु ने प्रारम्भ किया।
2. ये सफेद वस्त्र पहनते थे	ये निर्वस्त्र रहते थे
3. महिलाओं को मोक्ष मिल सकता है	महिलाओं को मोक्ष नहीं मिल सकता है।
4. 19वें तीर्थकर मल्लिनाथ महिला थी।	19वें तीर्थकर मल्लिनाथ पुरुष थे।
5. इसके अनुसार महावीर स्वामी विवाहित थे।	इसके अनुसार महावीर स्वामी अविवाहित थे।

➢ **जैन धर्म के पीछड़ने के कारण**

(1) कठिन भाषा
(2) कठोर नियम
(3) महिलाओं का बराबरी न होना
(4) राजाओं का संरक्षण न प्राप्त होना।
(5) निवस्त्र रहना
(6) ब्रह्मचर्य रहना

➢ **प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिन्ह**

क्र.सं.	प्रमुख जैन तीर्थंकर	चिह्न
1.	ऋषभदेव	बैल
2.	अजीतनाथ	हाथी
3.	संभवनाथ	अश्व
6.	पद्मप्रभू	कमल
7.	सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक
19.	मल्लिनाथ	कलश
21.	नेमिनाथ	नीलकमल
22.	अरिष्टनेमि	शंख
23.	पारसनाथ	सर्प
24.	महावीर स्वामी	सिंह

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

05. बौद्ध धर्म (Buddhism)

- बौद्ध धर्म का प्रारंभ महात्मा बुद्ध ने किया था।
- महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था।
- इनका जन्म 563 ई.पू. में नेपाल के लुम्बनी कपिलवस्तु में हुआ।
- इनके पिता सुद्धोधन क्षत्रिय (शाक्य गण के प्रधान) थे।
- इनकी माता महामाया कोलीय वंश की थी।
- जन्म के सात दिन बाद महामाया की मृत्यु हो गई।
- इनकी मौसी गौतमी ने इनका पालन पोषण किया। गौतमी इनकी सौतेली माँ भी थी।
- इनका विवाह 16 वर्ष की अवस्था में यशोधरा (गोपा/ बिम्बा/ भदकच्छना) नामक अति सुंदर स्त्री से हुआ।
- इनके पुत्र का नाम राहुल था।
- सिद्धार्थ को तथागत, कनकमुनि, शाक्यमुनि भी कहते है।
- इन्हें एशिया का ज्योतिपुंज (Light of Asia) भी कहा जाता है।
- एक दिन इन्होंने अपने राज्य में नगर भ्रमण के दौरान वे चार अवस्थाओं- गरीब, बीमार व्यक्ति, वृद्ध व्यक्ति, शव तथा एक सन्यासी को देखा। जिसके कारण इनके मन में वैराग्य (गृह त्याग) की इच्छा उत्पन्न हो गई और ये 29 वर्ष की आयु में अपना गृह त्याग दिए। जिसे बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा गया।
- इन्होंने अलारकलाम से सांख्य दर्शन (वैशाली में) तथा रूद्रकराम (राजगृह में) से योग दर्शन की शिक्षा ग्रहण किए।
- महात्मा बुद्ध अपने पाँच मित्रों के साथ सारनाथ के मृगदाब वन में तपस्या करने लगे। 6 वर्ष तक कठोर तपस्या किए।
- वहां एक कन्या ने इनसे कहा कि- वीणा को इतना न खींचो कि वह टूट जाए और इतना कम भी न खींचो कि वह बजे ही नहीं। इस बात को सुनकर महात्मा बुद्ध सारनाथ से गया (उरूबेला) चले आए और तपस्या करने लगे।
- यहाँ इन्हें निरंजना (फाल्गु) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा के दिन ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद वह वृक्ष महाबोधि वृक्ष कहलाया तथा यह स्थान बोधगया कहलाया।
- ज्ञान प्राप्ती के बाद इन्हें महात्मा बुद्ध कहा गया।
- बुद्ध का शाब्दिक अर्थ ''ज्ञान संपन्न व्यक्ति'' होता है।
- इन्होंने अपना पहला उपदेश सारनाथ में अपने मित्रों को दिया। जिसे बैध धर्म में महाधार्म चक्रप्रर्वतन कहते हैं।
- इन्होंने सर्वाधिक उपदेश कौशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिया जोकि पाली भाषा में निहित है।
- इन्होंने श्रावस्ती में अंगुलीमाल डाकू को शिक्षा दी।
- महात्मा बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्य आनंद तथा उपालि थे।
- आनंद के कहने पर महात्मा बुद्ध ने महिलाओं को बौद्ध संघ में प्रवेश की अनुमति वैशाली में दिए और उन्होंने कहा कि अब बौद्ध धर्म ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा।
- बौद्ध धर्म अपनाने वाली पहली महिला गौतमी और दूसरी महिला आम्रपाली थी।
- बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला पुरुष तपस्सु तथा मल्लि था।
- महात्मा बुद्ध ने कहा कि मेरे उपदेशों को अंधविश्वास के रूप में मत मानों बल्कि इसे तर्क के आधार पर अपनाओं।

महात्मा बुद्ध के चार सत्य वचन

1. संसार दुखों से भरा है।
2. सभी के दुखों का कोई न कोई कारण अवश्य है।
3. दु:ख का सबसे बड़ा कारण इच्छा है।
4. इच्छा पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

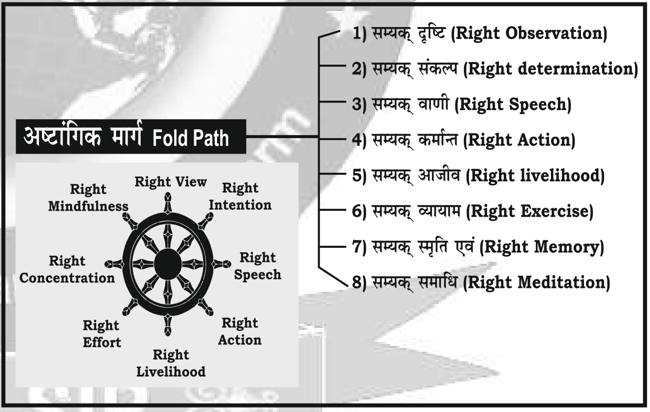

- महात्मा बुद्ध ने इच्छा पर नियंत्रण पाने के लिए अष्टांगिक मार्ग (मध्य मार्ग, बीच का रास्ता) दिया और कहा कि व्यक्ति की इच्छा इतनी बड़ी नहीं होनी चाहिए कि वह पूरी नहीं हो सके और इच्छा इतनी भी छोटी नहीं होनी चाहिए कि पूरा होने पर भी संतुष्टि न हो।
- महात्मा बुद्ध ने कहा कि यदि कोई इच्छा अधूरी रहेगी तो वह पुर्नजन्म का कारण बनेगी।
- पुर्नजन्म से छुटकारा पाने के लिए इच्छा को मारना पड़ेगा। इस क्रिया को उन्होंने मोक्ष कहा।
- महात्मा बुद्ध अपना उपदेश पाली भाषा में देते थे।

- महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति को सरल बनाने हेतु 10 शीलों पर बल दिया जो निम्न हैं–

दस शील Ten Precepts
1) अहिंसा (Ahimsa)
2) सत्य (Truth)
3) अस्तेय (चोरी न करना) Asthe (Not Stealing)
4) अपरिग्रह (किसी प्रकार की सम्पत्ति न रखना) Aparigraha (Not possessing any kind of property)
5) मद्य-सेवन न करना (Non Drinking)
6) असमय भोजन न करना (Non-Stop eating)
7) सुखप्रद विस्तर पर नहीं सोना (Not sleeping on a soothing bed)
8) धन-संचय न करना (Non-accumulation of wealth)
9) स्त्रियों से दूर रहना (Stay away from women)
10) नृत्य-गान आदि से दूर रहना (Abstain from dancing)

- मगध के राजा बिम्बिसार ने बुद्ध के निवास के लिए बेलुवन नामक महाविहार बनवाया।
- लिच्छिवीयों ने बुद्ध के निवास के लिए कुटाग्रशाला का निर्माण करवाया।
- गौतम बुद्ध उदायिन के शासनकल में कौशाम्बी आए थे।

➢ **बुद्ध के अनुयायी दो भागों में विभाजित थे–**

1. **भिक्षुक–** बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु सन्यास ग्रहण करने वाले व्यक्ति भिक्षुक कहलाए।
2. **उपासक–** गृहस्थ जीवन जीते हुए भी बौद्ध धर्म अपनाने वाले व्यक्ति उपासक कहलाए।

➢ **महात्मा बुद्ध ने 3 दर्शन दिए–**

1. **अनेश्वरवाद–** अर्थात् ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं।
2. **शून्यवाद–** कोई भी व्यक्ति सर्वोपरी नहीं है न ही सर्वशक्तिमान है।
3. **क्षणिकवाद–** संसार की सभी वस्तुएँ कुछ ही समय के लिए है। इनका विनाश निश्चित है अर्थात् ये सभी वस्तुएँ क्षणिक हैं।

➢ **बौद्ध धर्म के तीन प्रमुख सिद्धांतों को त्रिरत्न कहते है–**

1. बुद्ध
2. संघ
3. धम्म

- महात्मा बुद्ध का सबसे पहले शिक्षा का संकलन त्रिपिटक में किया गया।

बौद्ध धर्म के त्रिपिटक

1. विनयपिटक
2. सुतपिटक
3. अभिधम्म पिटक

- त्रिपिटक का अर्थ- ज्ञान भरा टोकरी होता है।
- त्रिपिटक श्रीलंका में सिंहली भाषा में लिखा गया।
- बौद्ध धर्म में प्रवेश की न्यूनतम आयु 15 वर्ष थी।
- बुद्ध अपने जीवनकाल में ही संघ का प्रमुख देवदत्त को बनाना चाहते थे।
- महात्मा बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश कुशीनगर में सुभद्द् को दिया।
- महात्मा बुद्ध उपदेश देते हुए पावापुरी पहुंच गए जहाँ एक जैन भिक्षु चन्द्र ने इन्हें सुकरमास (सुअर का मांस या जहरीली मशरूम) खिला दिया।
- महात्मा बुद्ध की तबीयत बिगड़ने लगी और उन्हें डायरिया हो गया।
- UP के मल्ल महाजनपद में स्थित कुशीनगर में उनकी मृत्यु हो गई जिसे महापरिनिर्वाण के नाम से जानते हैं।
- इनके अंतिम संस्कार को मल्य महाजनपद के राजाओं ने धूम-धाम से किया।
- महात्मा बुद्ध के मृत्यु के बाद उनकी अस्थियों को 8 अलग-अलग स्थानों पर दफनाया गया। जिन्हें अष्ट् महास्थान कहते है।
- गौतम बुद्ध ने अपने जीवन की अंतिम वर्षा ऋतु वैशाली में बिताया।
- महात्मा बुद्ध के समकालीन शासक बिम्बसार, उदयन, प्रसेनजीत तथा प्रद्योत थे।
- महात्मा बुद्ध की मृत्यु 483 ई.पू. में हुई और इनके मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चार बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।

संगिति	वर्ष	स्थान	राजा	पुरोहित
I.	483 BC	राजगीर	आजातशत्रु	महाकश्यप
II.	383 BC	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
III.	250 BC	पाटलिपुत्र	अशोक	मोग्गलीपुत्त तिस्स
IV.	प्रथम शताब्दी 72 ई.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क (II अशोक)	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)

➢ **चौथी बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म दो भागों में बँट गया–**

1. हिनयान

- यह महात्मा बुद्ध के उपदेशों में कोई परिवर्तन नहीं किए।
- हिनयान मुर्त्ती पूजा और भक्ति में विश्वास नहीं करता था।
- इस सम्प्रदाय का ग्रंथ पाली भाषा में था।
- आगे चलकर हिनयान दो भाग में विभक्त हो गया।
    1. वैभाषिक
    2. सौतांत्रिक

- हिनयान का आर्दश है अहर्त पद की प्राप्ति।
- हिनयान के भारत के दक्षिणी भाग में, श्रीलंका, जावा, वर्मा, आदि देश में फैला हुआ है।
- हिनयान अवस्था का विशालतम एवं सर्वाधिक विकसित शैल्यकृति चैत्य गृह कार्ले (पुणे) में स्थित है।

2. महायान

- यह महात्मा बुद्ध के उपदेशों में परिवर्तन करके उसे आधुनिक रूप दे दिए।
- बुद्ध ईश्वर मानकर उनकी उपासना भी करते थे तथा मुर्त्ति पूजा भी करते थे।
- इस सम्प्रदाय का ग्रंथ संस्कृत भाषा में था।
- महायान आगे जाकर ब्रजयान शाखा में टूट गई।
- ब्रजयान शाखा ही बौद्ध धर्म के विनाश का कारण बनी। क्योंकि इन लोगों ने मूर्ति पूजा, मध्यपान, वैश्यावृत्ती को अपना लिया।
- इस सम्प्रदाय का प्रमुख गंथ गुहय समाज तथा मंजुश्री मुलकल्प।
- चीन तथा थाइलैंड में ब्रजयान शाखा की अधिकता है।
- बिहार के भागलपुर स्थित विक्रमशिला विश्वविद्यालय में ब्रजयान शाखा की शिक्षा दी जाती थी। इसे धर्मपाल ने बनवाया था।
- नालंदा विश्वविद्यालय में महायान की शिक्षा दी जाती थी। जिसके संस्थापक कुमारगुप्त थे। जिसे बख्तियार खिलजी ने ध्वस्त कर दिया।
- ओदंतपुरी विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के महायान से संबंधित है। जिसके संस्थापक गोपाल थे।
- कान्हेरी की शैल्यकृत गुफा में 11 सिर और 4 भुजाओं के बोधिसत्व का अंकन मिलता है।
- सारनाथ की भूमि स्पर्श मुद्रा वाले बुद्ध की प्रतिमा गुप्तकाल में बनाई गई थी।
- बुद्ध की खड़ी प्रतिमा कुषाण काल में बनाई गई थी।
- गौतम बुद्ध को देवता का स्थान कनिष्क के समय में दिया गया।
- भारत में सबसे पहले जिस मानव प्रतिमा की पूजा किया गया वह बुद्ध की प्रतिमा थी और इसी के साथ मूर्ति पूजा की नींव रखी गयी।
- बुद्ध की 80 फूट की प्रतिमा जो बोधगया में है उसे जापानीयों द्वारा निर्मित की गयी है।
- 30 फीट ऊँचा और 10 फीट लम्बा गौतम बुद्ध का शयनमुद्रा में मूर्ति बोधगया में बन रहा है।
- बुद्ध की प्रथम मूर्ति शैली मथुरा शैली थी।
- बुद्ध का सर्वाधिक मूर्ति गांधार शैली में मिला।
- धार्मिक जुलूस का प्रारंभ बौद्ध धर्म से हुआ।
- बौद्ध धर्म का रामायण अश्वघोष की पुस्तक बुद्धचरितम् को कहा जाता है।
- भारत तथा एशिया का सबसे बड़ा मठ तवांगमठ अरूणाचल प्रदेश में है जो विश्व का दूसरा सबसे बड़ा बौद्ध मठ है।
- विश्व का सबसे बड़ा बौद्ध मठ पोतलामहल, लहासा (तिब्बत) में है।
- बौद्ध धर्म का शब्दकोश (Dictionary) महाविभाष्य सूत्र को कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म को अपनाने वाले शासक- अशोक, कनिष्क (महायान), नागार्जुन, अश्वघोष, वसुमित्र थे।
- अशोक बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने पुत्र महेंद्र तथा पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था।

➢ बौद्ध साहित्य

- इन ग्रंथों का संबंध बौद्ध धर्म से है। बौद्ध साहित्य पाली भाषा में मिले हैं। जातक ग्रन्थ में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की 200 कहानियाँ हैं।
- ललित विस्तार में महात्मा बुद्ध की पूरी जीवनी है।
- अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपद की चर्चा है।
- बौद्ध धर्म की सबसे पवित्र पुस्तक त्रिपिटक है, जो 3 पुस्तकों का समूह है।

1. **सूत पिटक–** यह सबसे बड़ा पिटक है। इसे बौद्ध धर्म का इंसाइक्लोपिडिया कहते हैं।
2. **विनय पिटक–** यह सबसे छोटा पिटक है। इसमें बौद्ध धर्म के प्रवेश की चर्चा है।
3. **अभिधम्म पिटक–** इसमें महात्मा बुद्ध के दार्शनिक विचारों की चर्चा है।

बौद्ध धर्म से जुड़े चिन्ह

(i) गर्भ – हाथी
(ii) जन्म – कमल
(iii) गृहत्याग – घोड़ा (महाभिनिष्क्रमण)
(iv) युवा अवस्था – सांड
(v) ज्ञान प्राप्ति – पीपल (बौद्ध वृक्ष)
(vi) प्रथम उपदेश – चक्र (धर्मचक्र प्रवर्तन)
(vii) समृद्धि – शेर
(viii) निर्वाण – पद्चिह्न
(ix) मृत्यु – स्तूप (महापरिनिर्वाण)

Note :– महात्मा बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति तथा मृत्यु वैशाख (अप्रैल) महीनें में पूर्णिमा के दिन हुई। वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा कहते हैं।

बौद्ध तथा जैन धर्म में समानता

- दोनों ने मोक्ष प्राप्ती तथा पुर्नजन्म में विश्वास किया।
- दोनों ने मूर्तिपूजा तथा भगवान के अस्तित्व का विरोध किया।
- दोनों ने कर्मकाण्ड का विरोध किए।
- दोनों ही हिन्दु धर्म से टूटे थे।

बौद्ध तथा जैन धर्म में अन्तर

- ☞ जैन धर्म ने पुर्नजन्म का कारण आत्मा को बताया जबकि बौद्ध धर्म ने इच्छा को बताया।
- ☞ जैन धर्म ने मोक्ष प्राप्ति के लिए संलेखना विधि अपनाया जबकि बौद्ध धर्म ने अष्टांगिक मार्ग अपनाया।
- ☞ जैन धर्म में ज्ञानप्राप्ति को कैवल्य कहा गया जबकि बौद्ध धर्म में मोक्ष कहा गया।

बौद्ध धर्म के आगे बढ़ने के कारण

1. जैन धर्म की भाषा प्राकृत थी, जो बहुत ही कठिन थी। जबकि बौद्ध धर्म की भाषा पाली थी, जो उस समय की सबसे लोकप्रिय भाषा थी।
2. जैन धर्म में बहुत की कठोर नियम थे। जबकि बौद्ध धर्म के नियम सरल थे।
3. जैन धर्म में महिलाओं को सम्मान नहीं दिया गया जबकि बौद्ध धर्म में महिलाओं को बराबरी का अधिकार दिया गया।
4. जैन धर्म में ब्रह्मचर्य तथा अहिंसा पर बहुत अधिक ध्यान दे दिया जबकि बौद्ध धर्म ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।
5. जैन धर्म में निर्वस्त्र रहने का प्रावधान था, जो असभ्य प्रतीत होता था, जबकि बौद्ध धर्म में निर्वस्त्र रहने का प्रावधान नहीं था।
6. जैन धर्म में केवल दो ही संगीतियाँ हुई, और वो भी 900 वर्ष के अंतराल पर, जबकि बौद्ध धर्म में चार संगितियां हुई वो भी 100 वर्ष के अंतराल पर।
7. जैन धर्म को बड़े-बड़े राजाओं का समर्थन नहीं मिल सका। जैन धर्म को मानने वाला प्रमुख राजा चन्द्रगुप्त मौर्य तथा खारवेल थे, जबकि बौद्ध धर्म को बड़े-बड़े राजाओं का संरक्षण मिला। बौद्ध धर्म मानने वाले प्रमुख राजा अशोक, कनिष्क, पालवंश, चीन एवं पूर्वी एशिया आदि।

जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म दोनों के पिछड़ने के कारण

- ☞ दोनों ही धर्म हिन्दु धर्म के कुरितियों के विरूद्ध आवाज उठाकर आगे बढ़े हुए थे। इन लोगों ने मूर्तिपूजा तथा कर्मकांड का विरोध किया। किन्तु कालांतर में इन लोगों में भी कुरितियाँ आ गई। इन लोगों ने भी मूर्तिपूजा तथा कर्मकांड प्रारम्भ कर दिये।
- ☞ दोनों धर्मों ने हिन्दु धर्म के वर्ण (जाति) प्रथा का विरोध किया, किन्तु कालांतर में इनमें भी जाति व्यवस्था आ गई।
- ☞ बौद्ध तथा जैन मठों के मठाधीश धार्मिक बिन्दुओं पर कम ध्यान देने लगे तथा भोग-विलास में लग गए।
- ☞ जैन तथा बौद्ध धर्म की कमजोर स्थिति का फायदा उठाकर शंकराचार्य ने हिन्दु लोगों को जागरूक किया साथ ही गुप्त काल के राजाओं ने हिन्दु धर्म में अनेक त्योहार इत्यादि जोड़कर हिन्दुओं को एकत्रित कर दिया।

❏❏❏

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR